VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
05 SEP 2024
RECEIVED

ESSAY

Name of Candidate	ममता		Test Code	2574						
Medium Hindi/Eng.	हिंदी	Registration Number	1	2	6	9	5	5	5	
Centre		Date	0	5	0	9	2	0	2	4

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवष्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।
2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।
3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रष्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवष्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।
2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।
3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।
4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।
5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।
6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Structure and Flow
3. Dimensional Coverage
4. Language Competence
5. Length of Essays
6. Creativity Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

VisionIAS

For one-to-one mentoring session on this copy, call us at 7042691891 or send an email to appointment@visionias.in

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

VisionIAS

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

All the Best

"सत्य आपको मुक्त कर देगा, लेकिन पहले यह आपको परेशान करेगा।"

एक बार [बुद्ध] अपने नगर भ्रमण हेतु निकले थे तभी रास्ते में उन्हें चार व्यक्ति बारी - बारी मिलते हैं - वृद्ध व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, मृत व्यक्ति तथा एक संन्यासी। इन चारों को देख कर बुद्ध के मन में कई सवाल उत्पन्न होते हैं और वह अपने साथ के लोगों से पूछते हैं कि, सभी का जीवन ऐसे ही गुजरता है क्या? तब उनके साथियों ने उन्हें 'हाँ' में जवाब दिया तब से बुद्ध बेचैन रहने लगे और अंतः गृहत्याग दिया और ज्ञान की प्राप्ति हेतु छह साल कठोर तपस्या के बाद उन्हें सत्य की प्राप्ति हुई और, वह महात्मा बुद्ध कहलाये।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपर्युक्त प्रसंग से स्पष्ट है कि, सत्य प्राप्ति का मार्ग आसान नहीं होता वह पहले आप को उसकी प्राप्ति तक परेशान करेगा और अंततः जब वह प्राप्त हो जाता है तो वह आपको सांसारिक बंधनों से मुक्त कर देता है।

परन्तु, क्या सत्य के लिए संघर्ष या परेशान होना अनिवार्य है? — नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी जैसे व्यक्तियों ने अपने विचारों को ही सत्य मान लिया और आम जनता को परेशान किया, स्वयं परेशान नहीं हुये अंततः इन्हीं का पतन हो गया अर्थात, बिना तप के मान या प्राप्त किया हुआ सच छद्म सच होता है जो आपको तत्कालीन सफलता तो दे सकता है किन्तु अंतिम सफलता नहीं।

इसी प्रकार भारत में ब्रिटिश शासन को देख सकते हैं - उनका मानना

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

था कि, वे भारत में भारतीयों को सभ्य बनाने हेतु है किन्तु वास्तविक उद्देश्य उनका धन प्राप्त करना ही था अंतः उनके साम्राज्य का पतन हुआ।

तो प्रश्न उठता है कि फिर **सत्य क्या** है? और यह **परेशान क्यों** करता है?

एक बार **डॉ अम्बेडकर** को बड़ौदा शहर में नौकरी लगी तब उन्होंने सारे शहर में कमरा किराये लेने हेतु घूमते रहे किन्तु उन्हें उनकी जाति के कारण कमरा नहीं मिलता है अंत में एक कमरा मिलता है मकान मालिक ने जाति पूछी वहीं इन्होंने बतायी नहीं।

एक दिन जब वह सो के उठे तो उनके कमरे के बाहर बहुत से हथियार लिये लोग उन्हें मारने हेतु खड़े थे जिसमें उनका मकान मालिक भी था। बड़ी मुश्किल

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से वह वहाँ से अपने दोस्त की मदद से जान बचा कर निकले।

इसी प्रकार मलाला यूसुफजई ने महिलाओं की शिक्षा हेतु तालिबानियों से संघर्ष करना पड़ा जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक शोषण शामिल था

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि, जो व्यवस्थाएँ हमें आज देखने को मिलती है - भारतीय संविधान, हिंदू बिल कोड, महिला शिक्षा इत्यादि के पीछे कुछ लोगों का गहरा संघर्ष है और वह इस संघर्ष में दृढ़ रहे बिना विचलन के चले तब जाकर हमें सच से अवगत करा व पाये।

उसी प्रकार आई. ए. एस अधिकारी अशोक खेमका ने अपने जीवन काल में भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम चला रखी है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जिसका परिणाम 30 वर्ष की सेवा में 55 बार स्थानांतरण तथा अन्य दबावों का सामना करना पड़ा

उसी प्रकार जे. के. रॉलिंग ने हैरी पॉटर लिखने से पहले अनेक पर असफलता का सामना किया।

उपर्युक्त वक्तव्य स्पष्ट करते हैं कि सच तक पहुँचने के लिए एक लम्बी यात्रा चलनी पड़ती है। अनेक नैतिक मूल्यों से अपने को सुसज्जित करना पड़ता है।

सत्य मिलने पर व्यक्ति मुक्त कैसे हो जाता है? — सत्य की प्राप्ति के जब वह संघर्ष कर रहा होता है तो सत्य मिलने पर वह मुक्त हो क्यों हो जाता है? और मुक्त होने का यहाँ (जीवन) क्या अर्थ है?

VisionIAS

उपर्युक्त सभी प्रश्नों को **गांधीजी** ने एक ही वाक्य में बहुत ही सुंदर रूप से स्पष्ट किया है – "सत्य ही ईश्वर है।"

उपर्युक्त सूक्ति सारगर्भित है और सम्पूर्ण निबंध को समेटने की ताकत रखती है – जिस प्रकार • ईश्वर की प्राप्ति के बाद व्यक्ति मुक्त हो जाता है उसी प्रकार सत्य कई गुणों, मूल्यों का समूह है जो अपने आप में पूर्ण है, निरपेक्ष है अतः व्यक्ति को मुक्त कर देता है – सांसारिकता, इच्छाओं, वासनाओं, भावनाओं की आसक्ति इत्यादि से मुक्ति।

सत्य का मुक्त करने को कई स्तरों पर देखा जा सकता है – **व्यक्ति के स्तर पर मुक्ति** – महात्मा गांधी के जीवन से सीख सकते हैं उनकी आत्म कथा – "**सत्य के साथ मेरे प्रयोग**" में उन्होंने

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मन, वचन, कर्म, प्रत्येक स्तर पर व्यक्ति के कार्यों में सामंजस्य युक्त होना ही सत्य माना है और, उन्होंने इसे अपने जीवन में न केवल सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया है बल्कि सत्याग्रह, चौरी-चौरा कांड के बाद असहयोग आंदोलन वापस ले कर व्यवहारिक रूप से भी अपनाया है।

सामाजिक स्तर पर सत्य को देखें तो रोज़ा पार्क द्वारा सार्वजनिक बस में श्वेत व्यक्ति को अपनी सीट न देने के खिलाफ रंगभेद विरोधी आंदोलन हुआ, संघर्ष हुआ और अंतत: अमेरिका को रंगभेद विरोधी कानून बनाना पड़ा और अमेरिका में एक अश्वेत व्यक्ति राष्ट्रपति के रूप में चुना जाना सत्य का मुक्त होने का ही सुंदर दृष्टांत है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वैसे ही **धार्मिक क्षेत्र** में सत्य के लिए संघर्ष मध्यकाल में ईसाई धर्म में पोप की अराजकतावादी मानसिकता के खिलाफ प्रोटेस्टेंड धर्म की स्थापना जिसमें ईश्वर एवं भक्ति के बीच में सीधे संवाद हो मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं।

उसी प्रकार हाल ही में आयी फिल्म **'महाराज'** में करसनदास मूलजी द्वारा 'चरण सेवा' (एक से अधिक के साथ सभोग) जैसी कुप्रथा जिसे सामाजिक मान्यता मिली हुई थी को समाप्त करने के लिए संघर्ष और अंततः समाज के सहयोग से ही समाप्त कर पाना।

उसी प्रकार राजा राम मोहन राय, (सती प्रथा), ईश्वरचंद विद्यासागर (विधवा पुनर्विवाह) स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले जैसे समाज

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सुधारकों ने 19 वीं सदी में व्याप्त सामाजिक - धार्मिक कुरीतियों हेतु संघर्ष किया और अंततः सती प्रथा निरोधक कानून, (1829), विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856) इत्यादि कानूनों के रूप में सामने आता है।

वहीं देश के अर्थ में भारत आजादी के बाद से ही आदर्शवादी विदेश नीति का समर्थक रहा है जिसका परिणाम भारत - चीन युद्ध, 1962 के रूप में सामने आया। भारत ने इस सत्य को स्वीकारा तथा 'स्माईलिंग बुद्धा' नाम से परमाणु परीक्षण करके अपनी विदेश नीति में आदर्शवाद के साथ यथार्थवाद को भी स्वीकार किया और आज भारत विश्व की पाँचवी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यदि पर्यावरण के स्तर पर बात करें तो 1987 में 'ब्रटलैंड कमिशन' के आधार पर 'हमारा साझा भविष्य' नाम से रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें हमारे पर्यावरण संबंधी खतरों को स्पष्ट किया गया था। उसी परिप्रेक्ष्य में देशों ने मिलकर पृथ्वी सम्मेलन, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल, पेरिस जलवायु सम्मेलन जैसे सम्मेलनों का आयोजन किया।

भारत ने अपनी जिम्मेदारी मानते हुये 'पंचामृत' 'मिशन LiFE' जैसी व्यवस्थाओं को अपनाया है

उपर्युक्त सभी वक्तव्यों, उदाहरणों, दृष्टांतों से स्पष्ट है कि सत्य अंततः व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, पृथ्वी सभी स्तरों पर मुक्त करता है परेशानी केवल सत्य को स्थगित्व प्रदान

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

करने हेतु आवश्यक है। सत्य ही है, जो अंत तक स्थापित रह पाता है। यदि सुकरात ने प्लेटो की बात मान कर जेल से भागना का निश्चय किया होता तो आज उनकी शिक्षाओं को हम पढ़ नहीं होते उन्होंने प्लेटो से कहा - "सुकरात या सुकरातवाद में से एक ही ज़िंदा रह सकता है और मैं सुकरातवाद को ज़िंदा रखने हेतु ज़हर का प्याला पीना पसंद करूँगा"

इस प्रकार सत्य के लिए सुकरात ने अपनी जान दे दी और समाज में सत्य को स्थापित कर दिया।

सत्य जीवन का सार है, सत्य तो जीवन का लक्ष्य होना चाहिए, यह भले कठिन मार्ग से गुजरेगा और अंतत: सही मंजिल तक ही पहुँचायेगा।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी बात को कबीर ने बहुत सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है –

"साँच बराबर कोई तप नहीं,
झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय साँच है
ताके हृदय आप ।"

अर्थात् सत्य अपने आप में पूर्ण है सर्वांगिज है, मनुष्य के अस्तित्व का सार है जिस पर चलना ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिए ।

आज के भौतिकवादी, उपभोक्तावादी संस्कृति में तप, तपस्या, संयम, धैर्य ही पृथ्वी के संरक्षण के लिए आवश्यक है अतः सच अंतिम रूप से उचित लक्ष्य की तरफ ले ही जाता है ।

VisionIAS

खण्ड–B / SECTION–B

"अव्यवस्था प्रकृति का नियम था, जबकि व्यवस्था मनुष्य का स्वप्न।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कुटज' में वह अपनी ~~कथा~~ अप्रस्तुत रूप में तथा प्रस्तुत रूप में कुटज की जिजीविषा का वर्णन करते है। हिंदी साहित्य जगत में प्रकृति का मानवीकरण तो कई जगह हुआ है किन्तु, व्यक्ति का प्रकृतिकरण का उदाहरण अनूठा ही देखने को मिलता है।

'कुटज' निबंध में द्विवेदी एक शिवालिक पहाड़ियों पर उगने वाले प्राकृतिक पौधे की तुलना, उसके कठोर जीवन की तुलना अपने जीवन से करते है, और पाते है कि कुटज और उनमें बहुत समानताएँ है - दृढ़ इच्छाशक्ति,

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कठोर परिस्थितियों को सहने की क्षमता, जीवन के प्रति जिजीविषा इत्यादि फिर भी दोनों एक नहीं है।

तो प्रश्न है मूल अंतर किस का है? क्या यह अंतर व्यवस्था या अव्यवस्था का है? तो अगला प्रश्न है कौन (प्रकृति या मनुष्य) व्यवस्थित है और कौन अव्यवस्थित है?

प्रथमतः प्रकृति में क्या **अव्यवस्था का नियम** पाया जाता है?

भू-आकृति प्रदेशों की बात करें तो हम पाते हैं कि, भूकम्प, चक्रवात, ज्वालामुखी क्रियाएं, पहाड़, मैदान, पठार इत्यादि कई भी और कभी भी देखने को मिल जाते हैं - महाराष्ट्र का लातूर भूकम्प, भुज (गुजरात) का भूकम्प इत्यादि।

हालही में हुये केरल में भूस्खलन को भी प्रकृति की व्यवस्था

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के रूप में देखा जा सकता है,

उसी प्रकार वन, जंगल में विभिन्न आकार, प्रकार के वृक्ष पाये जाते है कहीं अमेजन जैसे घने वन पाये जाते है तो कहीं सहारा मरुस्थल जैसे वनस्पति विहिन क्षेत्र भी पाया जाता है।

उसी प्रकार किसी स्थान पर गर्मी होती है तो कहीं वर्षा, तो कहीं सर्दी मौसम की अव्यवस्था भी प्रकृति में देखने को मिलती है।

यहाँ तक जीवों की संरचनाओं के स्तर पर भी विभिन्नता, अव्यवस्था देखने को मिलती है। कोई हाथी जितना बड़ा जीव है तो कोई बैक्टिरिया जैसा छोटा जीव।

सूर्य, ब्रह्माण्ड, वायु, प्रकाश, इत्यादि जैसी रहस्यमय व्यवस्थायें भी प्रकृति की देन ही है।

VisionIAS

अतः उपर्युक्त आधारों पर कहा जाये तो प्रकृति न केवल अव्यवस्थित है बल्कि विनाशकारी भी है।

द्वितीयतः प्रश्न है तो क्या मनुष्य व्यवस्थित है? – यदि प्रकृति ने व्यवस्थाएँ नहीं बनायी है तो क्या जो व्यवस्थाएँ आज हमें दिख रही है वह मनुष्य निर्मित है?

मनुष्य ने क्या - क्या व्यवस्थित किया है – मनुष्य ने प्रकृति द्वारा अव्यवस्थित भू-आकृतियों का व्यवस्थित करके अपने रहने लायक बनाया है। उसने नगर नियोजन, परिवहन अवसंरचना बना कर दुर्गम स्थलों तक पहुँच बनायी है। सभ्यताओं का विकास किया है, कृषि पद्धति हेतु व्यवस्थित स्थल, वातावरण उपलब्ध कराया है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मनुष्य के जीवन को सुंदर व सरल बनाने हेतु ~~प्रका~~ प्रकाश, वायु, मकान इत्यादि उपलब्ध कराये है।

प्रकृति ने जो 'मत्स्य न्याय' का सिद्धांत दिया उसे लोकतंत्र तक व्यवस्थित किया है।

सामाजिक स्तर पर समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा मनुष्य एवं ~~ब~~ पशुओं अंतर किया। - मूल्यों - सहिष्णुता, सहयोग, दया, करुणा इत्यादि के माध्यम से सभ्यता का विकास किया।

वस्त्र, भोजन के अनेक विकल्प उपलब्ध कराये है।

इस प्रकार मनुष्य ने प्रकृति के अव्यवस्थित स्वरूप को व्यवस्थित किया है जिससे मनुष्य का जीवन सरल एवं सुलभ हो सके।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रश्न यह है कि, क्या प्रकृति सदैव अव्यवस्थित होती है या मनुष्य को ऐसा लगता है?

प्रकृति ने मनुष्य को ऋतुओं का चक्र दिया है। जिसमें प्रत्येक क्षेत्र विशेष की जलवायु के अनुसार ऋतुओं का एक निश्चित आवृत्ति चक्र चलता रहता है। जिसी के अनुसार मनुष्य कृषि पद्धतियाँ, कार्य पद्धतियाँ सम्पन्न कर पाता है।

ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड का निश्चित नियम दिया जिससे पृथ्वी पर जीवन संभव है - पृथ्वी के मैग्नेटिक फिल्ड के कारण ब्रह्माण्ड से आने वाली विकिरणों से रक्षा करता है उसी प्रकार पृथ्वी का अपनी धुरी पर घुमना दिन-रात, तथा सूर्य के चारो-तरफ

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परिक्रमण से ऋतुओं, मौसम का निर्माण इत्यादि घटनाएँ हमें प्राप्त हुई जिससे जीवन संभव हो सका।

उसी प्रकार प्रत्येक जीव के आकार, प्रकार के अनुसार, प्रजनन, पाचन, श्वसन के नियमों का निर्माण होना - जैसे - मछलियों द्वारा गलफड़ों द्वारा श्वसन कार्य करना।

जनसंख्या नियंत्रण हेतु छोटे जीवों, बड़े जीवों के प्रजनन अवधि, प्रकार, मौसम का निर्धारण होना जैसे :-

छोटे जीव - एक वर्ष में दो से तीन बार प्रजनन क्षमता रखते हैं क्योंकि उनकी प्रजनन अवधि छोटी होती है तथा एक बार में कई बच्चों को जन्म देने की क्षमता रखते हैं वहीं हाथी जैसे बड़े जीवों की प्रजनन अवधि

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अधिक तथा एक बार में एक ही बच्चे को जन्म दे पाना।

इस प्रकार प्रकृति ने भोजन से शाकाहार, मांसाहार की व्यवस्था जीवों के अनुसार, कर रखी है जैसे - प्राथमिक उपभोक्ता, द्वितीयक उपभोक्ता इत्यादि

उसी प्रकार मिट्टी, वातावरण अनुकूलन इत्यादि की व्यवस्था प्रकृति ने व्यवस्था के अनुरूप कर रखी है।

मुगल गार्डन के सौंदर्य से हिमालयी सुंदरता को प्रदान करने का कार्य प्रकृति ने किया है।

क्या मनुष्य व्यवस्थित है यह केवल उसका स्वप्न नहीं है! क्या मनुष्य में कोई अव्यवस्था नहीं है?

VisionIAS

मनुष्य के अव्यवस्था पर नज़र डालें तो पाते है –

सामाजिक स्तर पर अव्यवस्था पैदा करके जाति, धर्म, लिंग इत्यादि में असमानता पैदा कर दी।

राजनीतिक स्तर पर बात करें तो राजतंत्र, तानाशाही, लोकतंत्र जैसी असमान व्यवस्था में वर्गों को बांट दिया – सत्ता के लिए संघर्ष पैदा किया – प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, रूस-यूक्रेन युद्ध इत्यादि

आर्थिक स्तर पर बात करें तो अमीर-गरीब, साधन सम्पन्न एवं साधनहीन वर्गों में अव्यवस्था पैदा की है, उपभोक्तावाद, भौतिकतावाद की संस्कृति को पैदा किया है **जैसे** – अमीर के पास 100 जोड़ी कपड़े होने पर भी वह नये कपड़े खरीदने निकल जाता है और गरीब के

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पास एक जोड़ी कपड़ा वह भी चार स्थानों से आधा सिला हुआ।

उसी प्रकार डिजिटल डिवाइड की वजह से न केवल अव्यवस्था पैदा हुई है साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी जैसे अपराधों को भी बढ़ावा दिया है जैसे हाल ही में दिल्ली में एक बुजुर्ग महिला को 'डिजिटल अरेस्ट' करके कुछ लोगों ने 85 लाख रुपये ले लिये - इस प्रकार की अव्यवस्थाएँ मनुष्य के द्वारा ही पैदा की जा सकती है।

पर्यावरण के स्तर पर देखे तो अनियोजित निर्माण, संसाधनों का दोहन अंधानुगामी विकास इत्यादि कारणों से पर्यावरण असंतुलन पैदा हुआ है जिसका परिणाम वर्षा पैटर्न में बदलाव, तीव्रता में बदलाव, समुद्र स्तर का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बढ़ना, तापमान का बढ़ना जैसी घटनाएँ देखने को मिलती है।

उपर्युक्त चारों पक्षों को एक छोटी सी 'Short movie' से समझा जा सकता है – एक बार एक व्यक्ति किसी बड़े बांध निर्माण हेतु जंगल में गया हुआ था और वह शाम के समय सब के चले जाने के बाद अकेला बैठा प्रकृति से बातें करता हुआ बताता कि, मनुष्य ने कैसे अपना प्रकाश बना लिया, जैसे पानी, धरती, सभी कुछ तो मनुष्य ने बना लिया अब प्रकृति की जरूरत ही क्या है। यही सोचता हुआ घमंड में अपनी गाड़ी शुरू करने का प्रयास करता है वह चालू नहीं होती है तभी मौसम बहुत खराब हो जाता है और सारी बांध निर्माण में लगी सामग्री बह जाती है, लाइट

VisionIAS

दूर जाती है और अंतत: उसकी गाड़ी में पानी भरने लगता है जिससे वह बचने के प्रयास में बाहर निकलता है और अपनी ~~धारा~~ गाड़ी की चाबी घुमा देता है - इधर - उधर उसे कुछ नहीं दिखता इतने में उसकी नज़र एक गुफा पत्थर से बनी थी वह वहाँ जा कर बचने का प्रयास करता है वर्षा रुक जाती है पर रात बहुत हो जाती है वह वहाँ फल खाता है चाँद के प्रकाश में रात गुजारता है और सुबह होने पर जब वह पैदल अपने पैरो से घर जा रहा होता है तब उसे समझ आ जाता है कि, "मनुष्य, प्रकृति की ही प्रतिकृति है।" - प्रकृति से ही मनुष्य का निर्माण हुआ है। प्रकृति में व्यवस्था है तभी मनुष्य में व्यवस्था है प्रकृति में अव्यवस्था है इसी लिए मनुष्य में अव्यवस्था है "अत: मनुष्य तो प्रकृति का उत्पाद मात्र है।"

VisionIAS

SPACE FOR ROUGH WORK

VisionIAS

'शक्ति का प्रेम नहीं 'प्रेम की शक्ति' — महात्मा गांधी

SPACE FOR ROUGH WORK

वृद्ध — बीमार — मृत
संन्यासी

- परिचय — बुद्ध की कथा से शुरुआत — सत्य बांध भी सकता है
- सत्य का अर्थ स्पष्ट करना — सत्य मुक्त भी कर सकता है

- सत्य मुक्त कैसे करता है
  - जिन्होंने सत्य का सामना किया — महात्मा गांधी
    - राजा राम मोहन राय ईश्वरचंद्र विद्यासागर
    - क्षेत्र — सामाजिक क्षेत्र — रंगभेद — रोज़ा पार्क
      - धार्मिक क्षेत्र — ईसाई धर्म में सुधार
      - राष्ट्र के क्षेत्र — चीन बुद्ध के बाद — स्माइलिंग बुद्धा
  - ईश्वर के समान

- सत्य परेशान कैसे करता है

उदा० — अम्बेडकर के जीवन की कहानी — कमर वाली
- नेल्सन मंडेला का संघर्ष
- अशोक खेमका — 30 — 55 बार स्थानांतरण

उदाहरण — जे. के. रॉलिंग — हैरी पोटर — असफल
- मलाला यूसुफजई — महिलाओं की स्थिति

सुकरात — की कथा से अंत

"साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप
जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप।"

SPACE FOR ROUGH WORK

परिचय –

प्रकृति में क्या अव्यवस्था है
- भू-आकृति चक्रवात, सुनामी, भूकंप, भूस्खलन,
- वन, जंगल - अमेजॉन, कांगो वर्षा वन
- जीवों की शारीरिक संरचना

मनुष्य में क्या व्यवस्था है
- नगर नियोजन, सभ्यताओं का विकास,
- ~~गृह~~ निर्माण अवसंरचना
- सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व्यवस्थाएं

प्रकृति में क्या व्यवस्था है – ~~कुज~~ 'कुटज'
- नियमित ~~ऋ~~तुओं की व्यवस्था।
- प्रजनन, पाचन, भोजन, वातावरण, अनुकूलन, मृदा, कृषि
- प्रकृति का सौंदर्य – हिमालयी सौंदर्य
- नदियों की निश्चित गति, वायु की निश्चित गति

मनुष्य में क्या अव्यवस्था है – स्वप्न
- ~~सामाजिक~~ असमानता
  - सामाजिक – जाति, धर्म – लिंग
  - राजनीतिक – राजतंत्र, वंशानुगत
  - धार्मिक
  - आर्थिक

वित्तीय धोखाधड़ी, साइबर अपराध

डिजिटल ~~अपराध~~ डिवाइडेड

VisionIAS

SPACE FOR ROUGH WORK

निष्कर्ष – प्रकृति की प्रतिकृति मनुष्य है

प्रकृति व्यवस्थित है तभी मनुष्य व्यवस्थित है।

कहानी – व्यक्ति एवं प्रकृति की

VisionIAS